समकालीन
हिन्दी साहित्य
वैश्वीकरण के संदर्भ में

संपादक : डॉ. बाबू जोसफ़

ता टी नायर 125
तावनी / स्वप्ना मोहन 130
में/ जिन्सि मैथ्यू 135
पार्वती. आर. 141
देवी. एस. 144
ता / निषा. एस 147
151
/अजित्त. एस. भरतन 154
/ सजिता .एस. आर. 159
162
ी. वी. एस. 167
र्भ में / जीना जोण 173
कविता कमलासनन 179
182
188
192
ष्णन 197
202
ी प्रिया. आर. 207
/ पिजु एस. जी. 212
215
221
कुमारी. के 227

वैश्वीकरण का प्रभाव समकालीन उपन्यासों में : एक झाँकी / सिंधु बी. ए. 232
वैश्वीकरण एवं हिन्दी उपन्यास / प्रियामोल. आर. वी. 235
साहित्य, संस्कृति एवं पर्यावरण भूमंडलीकरण के दौर में / डॉ. ए. एस. सुमेष 239
काशीनाथ सिंह के उपन्यासों का नव उपनिवेशी सरोकार / डॉ. मूसा एम 245
हिन्दी कहानी में दूसरा पुरुष और पति / डॉ. आर. जयचन्द्रन 253
वैश्वीकरण के दो चेहरे और हिन्दी कविता / डॉ. नवीना जे नरित्तूक्किल 262
भूमंडलीकरण एवं पारिस्थितिक विनाश—ज्ञानेन्द्रपति की कविताओं के सन्दर्भ में / डॉ. रॉय जोसफ 268
'क्रूरता' : वैश्वीकरण के सन्दर्भ में / अन्सा. ए 275
वैश्वीकरण और हिन्दी साहित्य : समकालीन कविताओं में / डॉ. श्रीजा जी आर 282
भूमंडलीकरण—कुमार अंबुज की कविताओं के सन्दर्भ में /दिनिमोल. एन. डी. 286
समकालीन कविता का वैश्विक सन्दर्भ / डॉ. विनय कुमार 293
वैश्वीकरण के सन्दर्भ में महानगरीय जीवन / डॉ. एस. शबीर बाशा 298
समकालीन हिन्दी नाटकों में भूमंडलीकरण से प्रभावित नारी-जीवन / डॉ. एम. प्रीतिलता 300
वैश्वीकरण : महिला सशक्तिकरण / साक्षी मारवाहा 305
वैश्वीकरण और हिन्दी भाषा का भविष्य / डी. निर्मल कौशिक 312
समकालीन हिन्दी कविता : वैश्वीकरण के सन्दर्भ में / डॉ. के. विजयभास्कर नायुडु 318
भूमंडलीकरण और हिन्दी कविता / डॉ. बाबू जोसफ 323

इस पुस्तक में संकलित आलेखों की मौलिकता, रीति-नीति एवं विचारों से संपादक अथवा प्रकाशक की सहमति अनिवार्य नहीं है। प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं।

ISBN : 978-93-81980-24-8

पुस्तक का नाम : समकालीन हिन्दी साहित्य : वैश्वीकरण के सन्दर्भ में

प्रथम संस्करण : 2016

मूल्य : 400.00

प्रकाशक : सरस्वती प्रकाशन
ए-483, कमरा नं. 965
रामश्याम अपार्टमेंट, उल्हासनगर, मुंबई

सर्वाधिकार : संपादक

शब्द-सज्जा : कम्प्यूटेक सिस्टम, दिल्ली-32

मुद्रक : कॉम्पैक्ट प्रिंटर्स, दिल्ली-32

SAMKALEEN HINDI SAHITYA :
VAISHVIKARAN KE SANDERBH MEIN
Edited by Dr. Babu Joseph

काशीनाथ सिंह के उपन्यासों का नव उपनिवेशी सरोकार

□ डॉ. मूसा एम

न्यास अपने स्वभाव और संस्कार से ही एक बहुरूपीय विधा है। "उपन्यास
ा की सबसे बडी विशेषता है कि वह मानव जीवन को अपनी समग्रता में
भिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम है। वह जीवन के उन अनछुए पक्षों को
घाटित और व्याख्यायित करता है जिन्हें सामान्यतया और कोई माध्यम नहीं
पाता। सब से बडी बात यह कि यह काम बहुत ही निर्ममता पूर्वक और
स्थ भाव से करता है।" (पंकज विष्ट-मुझे चाँद चाहिए की समीक्षा–तो तुम्हे
द चाहिए, आधुनिक हिंदी उपन्यास–सं–नामवरसिंह–पृ. सं. 54)

वर्तमान समय के बदलते हुए समाजिक यथार्थ को उपन्यास उसके पूरे
स्तार एवं वैविध्य में गहरी संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करता रहता है।
ूसंस्कृतिवाद के उदय की परिस्थितियाँ, भारतीय समाज के परंपरागत और
धुनिक द्वंदों का परस्पर विरोध, दलित अस्मिता, पहचान की राजनीति, पितृसत्तात्मकता
विखंडन, अश्वेत या नस्ल भेद की संवेदना, लैंगिक तटस्थता तथा समलिंग
बंध, अल्प-संख्यवाद तथा काश्मीर समस्या, पर्यावरण तथा पारिस्थितिकी की
मस्या, मानवाधिकार, स्वयंसेवी संस्थाओं तथा बाज़ारवाद के विविध पहलुओं
वं प्रतिरोध आदि उपन्यास के केंद्रीय विषय बने हैं।

वैश्वीकरण एवं विकास की योजनाओं के साथ बहकर जो बहुलता और
विधता आ गयी है उसको आत्मसात करने में आज के हिंदी उपन्यास सक्षम
हैं। वैश्वीकरण के प्रभवों का विश्लेषण इस विधा में सशक्त रूप में लक्षित
ता है। हिंदी के सभी सजग उपन्यासकारों ने वैश्वीकरण के दुष्प्रभावों पर विभिन्न